आधारभूत

पारिवारिक जीवन

प्रारंभिक पारिवारिक जीवन
प्रस्तावना

आपके जीवन के लिये परमेश्वर के पास एक अद्‌भुत (उद्‌देश्य) है। हर एक व्यक्ति के लिये, और आपके लिये भी, जीवन में सफलता होगी, यदि परमेश्वर के उद्‌देश्य के मुताबिक चलेंगे या नहीं इस पर आधारित होगी। परमेश्वर के उद्‌देश्य को जानकर उसे पूर्ण करने के लिये हमे यह जानना जरूरी है कि हमारे पारिवारिक (जीवन में) रिश्तों मे, यीशु के लिये कैसे जीना चाहिये। इसी बात में आपकी मदद करने के लिये इस अध्ययन की रचना की गयी है।

प्रत्येक (स्वाध्याय) पाठ के तीन हिस्से है।

(१) पवित्र शास्त्र का अध्ययन (२) मूलभूत प्रश्न और (३) पवित्र शास्त्र को यादर करना । पवित्र शास्त्र ही आपको परमेश्वर के वचनो का सत्य सिखायेगा। मूलभूत प्रश्नों से वचन की सच्चाई को आपके जीवन में लागू करने में मदद मिलेगी। पवित्र शास्त्रके वचनों को याद करने से सच्चाई को आपके हृदय में छुपाने में मदद होगी।

इस अध्ययन द्वारा आप परमेश्वर के पुरूष या स्त्री बनना सिखेंगे , परमेश्वर चाहते हैं वैसा पति या पत्नी कैसे बनना, अपने बच्चों को परमेश्वर में कैसे बड़ा करना , जीवन में अकेलेपन का कैसे सामना करना और अपलने प्यारो सें बिछडने वालों की सेवकाई कैसे करना, सिखेंगे।

प्रत्येक स्वाध्याय की शुरूवात प्रार्थना से कीजिये (करना) । प्रश्नों के उत्तर अपने ही शब्दों में लिखिये। प्रभु से मदद माँगे, कि जो आप सीख रहे हैं उस प्रकार से आप जियें। प्रभु आपको आशिषित करे, जब आप उसके वचन का अध्ययन कर रहे हैं।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ १
मनुष्य
(मनुष्य किस प्रकार बनें)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. किसके स्वरूप में मनुष्य बनाया गया था ? उत्पत्ति १:२६—२७

२. मनुष्य के लिए परमेश्वर का क्या उद्देश्य था? उत्पत्ति १:२८, भजन संहिता ११५:१६, ८:५—८ (फूलो, फलो और पृथ्वी पर भर जाओ

३. मनुष्य ने क्या किया जिसकी वजह से यह उद्देश्य कठिन हो गया? उत्पत्ति ३

४. किस प्रकार मनुष्य शैतान पर जयवन्त हो सकता है और परमेश्वर का उद्देश्य उसके जीवन में पूरा हो सकता है? १ यूहन्ना १:९, ५:४—५, मत्ती ६:३३, यूहन्ना १:२९, प्रकाशितवाक्य १२:१०—११

५. परमेश्वर ने मुनष्य को क्या दिया है ताकि उसके जीवन में परमेश्वर का उद्देश्य पूरा हो ? इफिसियों ४:८, रोमियों १२:६,११:२९

६. एक मनुष्य को बुद्धि कहाँ से मिलती है ताकि उसको दिए गए भेंट का उपयोग हो? नीतिवचन १:७, ९:९—१०, १३:२०, याकूब १:५

७. किस प्रकार मनुष्य उसके जीवन में स्थान पाता है? नीतिवचन १८:१६

८. जब एक मनुष्य अपने भेंट को परमेश्वर की सेवा में नहीं लगाता है तो क्या होता है ? मत्ती २५:१४—३०

९. मनुष्यों के जीवन का मार्गदर्शन कौन करता है? नीतिवचन १६:९

१०. जीवन के प्रति मनुष्य की मनोवृत्ति क्या होनी चाहिए? सभोपदेशक ३:२२, २:२४—२६

११. एक मनुष्य को दूसरों से किस प्रकार नाता जोडना चाहिए? १ यूहन्ना ४:७,गलातियों ५:१३—१४, १ तीमुथियुस ५:१—२

१२. क्या होता है जब हम दूसरों से उस प्रकार प्रेम करते हैं जिस प्रकार परमेश्वर हमसे कहता है? रोमियों १२:२१

१३. परमेश्वर के सामर्थ से बुराई पर जय पाने का क्या परिणाम होता हैं? प्रकाशितवाक्य २१:७

आधारभूत प्रश्न: (सिर्फ पुरूषों के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप स्वयं को परमेश्वर के स्वरून में रचे गए समान देखते हैं? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह इस सत्य को आपके लिए सच्चाई बना दे।

२. क्या आपने अपना हदय यीशु मसीह को दिया है और क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के उददेश्य को पूरा करने के लिए जीते हैं? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो हृदय से मैं इसी क्षण प्रार्थना करें''

''प्रिय प्रभु, यीशु मसीह में जिस प्रेम को आपने दिखाया उसके लिए धन्यवाद। हमे आपकी जरूरत है। मैं शैतान और इस संसार की बातों से मुड जाता हूँ। मैं हृदय को खोलता हूँ और पापों के लिए पश्चाताप करता हूँ। यीशु मसीह मैं विश्वास करता हूँ कि आप मेरे पापों के लिए मरे और फिर जी उठे। मेरे हृदय मे आईए और मेरे प्राण को बचा लीजिए। मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता बन जाईए और मेरे जीवन का नियंत्रण कीजिए। मुझे आपके पवित्र आत्मा से भर दीजिए ताकि मैं आपके लिए जिउँ। मेरे प्रार्थना को सुनने के लिए धन्यवाद, यीशु मसीह के नाम से मैं प्रार्थना करता हूँ, आमीन।''

३. क्या आपने उस भेंट को पाया है जो परमेश्वर ने आपको दिया है? हाँ—— नहीं —— यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको यह दिखाए।

४. क्या आप परमेश्वर के भेंट में जीवन पाने की खोज के बजाए कुछ और बनने की कोशिश करते हैं? हाँ—— नहीं —— यदि हाँ, तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मदद करें जो भेंट के उपयोग द्वारा परमेश्वर की सेवकाई हो।

५. क्या आपके जीवन के लिए परमेश्वर के उददेश्यों में आप आनन्द मनाते हैं? हाँ——नहीं —— यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इसी क्षण एक आभारी हृदय दे।

६. क्या आप इस संसार में लोगों के प्रति प्रेम रखते हैं ताकि आप बुराई पर जय पाने की खोज करें? हाँ ——नहीं ——यदि नहीं,तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मदद मांगे।

स्मरण करें: भजन संहिता ११५:१६ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

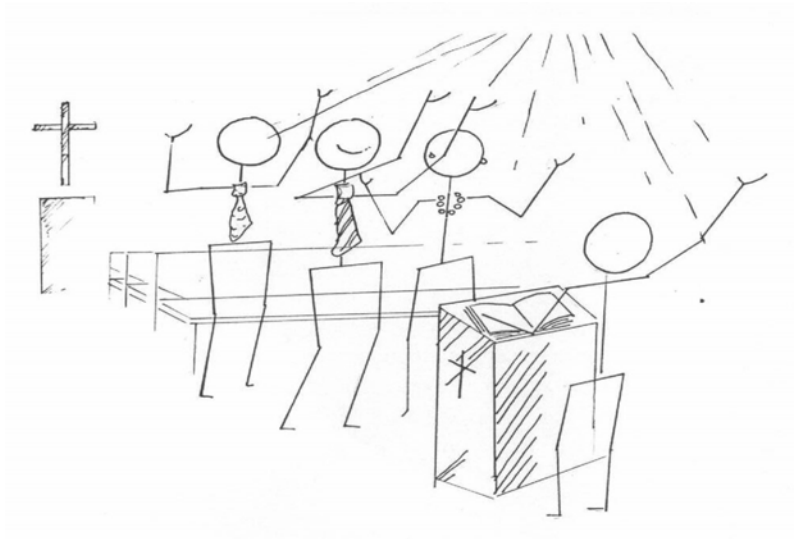

मनुष्य को उसके आशीषों में जो परमेश्वर ने उसे दिया है आनंद मनाना चाहिए जैसे वह यीशु मसीह के लिए जीता हैं।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ २
स्त्री
(किस प्रकार स्त्री बनें)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. स्त्रियाँ किसके स्वरूप में बनाई गई हैं? उत्पत्ति १:२६—२७

२. स्त्रियों के लिए परमेश्वर का उद्देश्य क्या था? उत्पत्ति १:२८, २:१८

३. स्त्री ने क्या किया जिसके द्वारा यह उद्देश्य कठिन हो गया? उत्पत्ति ३

४. स्त्री शैतान पर किस प्रकार जय पा सकती है और उसके जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों को पूरा कर सकती है? १ यूहन्ना १:९, ५:४—५, यूहन्ना १२:२९, प्रकाशितवाक्य १२:१०—११, मत्ती ६:३३

५. परमेश्वर ने स्त्रियों को क्या दिया है ताकि उनके जीवन में परमेश्वर के उद्देश्य पूरा होने में मदद मिले ? १ कुरिन्थियों ११:३,६, ८—११, १ तीमुथियुस २:११—१४, इफिसियो ४:८,

६. स्त्री को स्त्री बनने के लिए बुध्दि कहाँ से मिलती है? नीतिवचन १:७, ९:१०, ३१:३०, याकूब १:५, तीतुस २:३—५

७. जीवन में एक स्त्री अपना स्थान कहाँ से पाती है? नीतिवचन १४:१, ३१:३१, मत्ती २६:६—१३, प्रेरितों के काम ९:३६

८. वह स्त्री किस समान होती है जो परमेश्वर की बुध्दि के अनुसार जीवन व्यतीत नहीं करती है ? नीतिवचन १४:१, ९:१३—१७,३०:२०, २ तीमुथियुस ३:६

९. जो स्त्री कपट में जीती है उसके साथ क्या होगा ? नीतिवचन १०:२७—३०, १३:९

१०. जो स्त्री परमेश्वर के सिद्धांतो के अनुसार जीवन व्यतीत करती है उसकें साथ क्या वादा रहता है? नीतिवचन ३:५—८

११. जीवन के प्रति एक स्त्री की मनोवृत्ति क्या होनी चाहिए? फिलिप्पियों ४:४—७

१२. दूसरों लोगों के साथ एक स्त्री को कैसा बर्ताव करना चाहिए ? १ यूहन्ना ४:७, गलातियों ५:१३—१४, १ तीमुथियुस ५:१—२

१३. जब हम दूसरों से उस तरह प्रेम करते हैं जिस प्रकार परमेश्वर हमसे कहता है तो क्या होता है ? रोमियों १२:२१

१४. परमेश्वर की सामर्थ द्वारा जब बुराई पर जय पाते हैं तो उसका परिणाम क्या होता है? प्रकाशितवाक्य २१:७

आधारभूत प्रश्न : (सिर्फ स्त्रियों के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप स्वयं को परमेश्वर के स्वरूप में बनाए गए समान देखते हैं ? हाँ ... नहीं ..... यदि नहीं तो परमेश्वर से मांगे कि यह इस सत्य को आपके लिए सच्चाई बना दे।

२. क्या आपने उपना हृदय यीशु मसीह को दिया है? हाँ ... नहीं ..... यदि नहीं, तो हृदय से यह प्रार्थना करें।

‘‘प्रिय प्रभु, यीशु मसीह में जिस प्रेम को आपने दिखाया उसके लिए धन्यवाद। हमें आपकी जरूरत है। मैं शैतान से और इस संसार की बातों से मुड़ जाती हूँ। मैं हृदय को खोलती हूँ और पापों के लिए पश्चाताप करती हूँ। यीशु मसीह, मैं विश्वास करती हूँ कि आप मेरे पापों के लिए मरे और फिर जी उठें। मेरे हृदय में आईए और मेरे प्राण को बचा लीजिए। मेरे प्रभु और उद्धारकर्ता बन जाइए और मेरे जीवन को नियंत्रण कीजिए। मुझे आपकी पवित्र आत्मा से भर दिजिए ताकि मैं आपके लिए जिऊँ। मेरे

प्रार्थना को सुनने के लिए धन्यवाद, यीशु मसीह के नाम से मैं प्रार्थना करती हूँ , आमीन। ''

३. क्या आप इसलिए जीते हैं कि आपके जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों के लिए आप जिएँ एक साथी ऐसा एक घराने में बनकर जहाँ परमेश्वर ने आपको रखा है? हाँ.... नहीं.... यदि नहीं तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इसमें मदद करें।

४. क्या आप झगडालू हैं और यह कोशिश करते है कि पुरूष बनें न कि परमेश्वर में स्त्री के बुलाहट को स्वीकारते हैं ? इस बात का एहसास करते हुए कि अनन्तकाल का इनाम जिस तरह पुरूषों के लिए है उसी तरह स्त्रियों के लिए भी है। हाँ .... नहीं.... यदि हाँ, तो इस क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको ऐसा हृदय दें जो आपके जीवन में परमेश्वर के कार्य को स्वीकार कर सकें।

५. क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर के उद्देश्यों में आनंद मनाते हैं ? हाँ .. .. नहीं.... यदि नहीं, तो पश्चाताप करें ओर मांगे कि परमेश्वर इसी क्षण आपको धन्यवादित हृदय दें।

६. क्या आप इस संसार में बुराई पर विजय लोगों को प्रेम दिखाने के द्वारा करते हैं? हाँ .... नहीं.... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मदद मांगे।

<u>स्मरण करें</u> : <u>उत्पत्ति २:१८</u> को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

एक स्त्री धन्य कहलाई जाएगी जब वह दूसरों की जरूरतों की सेवकाई करेंगी।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ३
पति
(ईश्वरीय पति कैसे बनें)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. एक पत्नी को पाने के विषय में परमेश्वर क्या कहता है? नीतिवचन १८:२२

२. परमेश्वर के लिए विवाह क्या होता है? मत्ती १९:४—६

३. एक मसीही को किससे विवाह करना चाहिए? २ कुरिन्थियों ६:१४—१५

४. एक परिवार में पति की पदवी क्या होती है? इफिसियों ५:२३

५. अपने पत्नी के प्रति पति की क्या जिम्मेदारियाँ होती हैं? इफिसियों ५:२५, २८—२९, ३३, कुलुस्सियों ३:१९, १ कुरिन्थियों ७:३, १ पतरस ३:७,

६. विवाह में कामाविषय के प्रति परमेश्वर के क्या निर्देशतत्व हैं? इब्रानी १३:४, १ कुरिन्थियों ७:४—५

७. पति की जिम्मेदारियाँ क्या होती है एक परिवार के जरूरतों के प्रयोजन के प्रति? तीमुथियुस ५:८

आधारभूत प्रश्न : (सिर्फ पतियों के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप अपनी पत्नी को परमेश्वर की ओर से भेंट समझते हैं ? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो परमेश्वर से इसी क्षण प्रार्थना करें कि वह आपको, अपने पत्नी को परमेश्वर की ओर से भेंट ऐसा समझने में मदद करें।

२. क्या आप परिवार के अध्यक्ष की पदवी की पूर्ति करते हैं परिवार के सदस्यों की जरूरतो के लिए प्रार्थना करने के द्वारा? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप कर प्रार्थना करें ताकि, परमेश्वर आपको घर का अध्यक्ष बनने में मदद करें।

३. क्या आप पत्नी को उस रूप से प्रेम करते हैं जिस तरह परमेश्वर चाहता है कि आप उसकी जरूरतों को पूरा कर उसका आदर करें? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें कि परमेश्वर आपको ऐसा करने में मदद करें।

४. क्या आप विवाह शपथ के प्रति विश्वासयोग्य हैं? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको विश्वासयोग्य पति बनने में मदद करें।

५. क्या आप परिवार की जरूरतों को पूरा करने की खोज करते हैं, आत्मिक, भावुक, मानसिक, शारीरिक तथा वस्तु, विशिष्ठ, हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मदद करें की परिवार के जरूरतों की सेवकाई करें।

स्मरण करें : **इफिसियों ५:२५** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

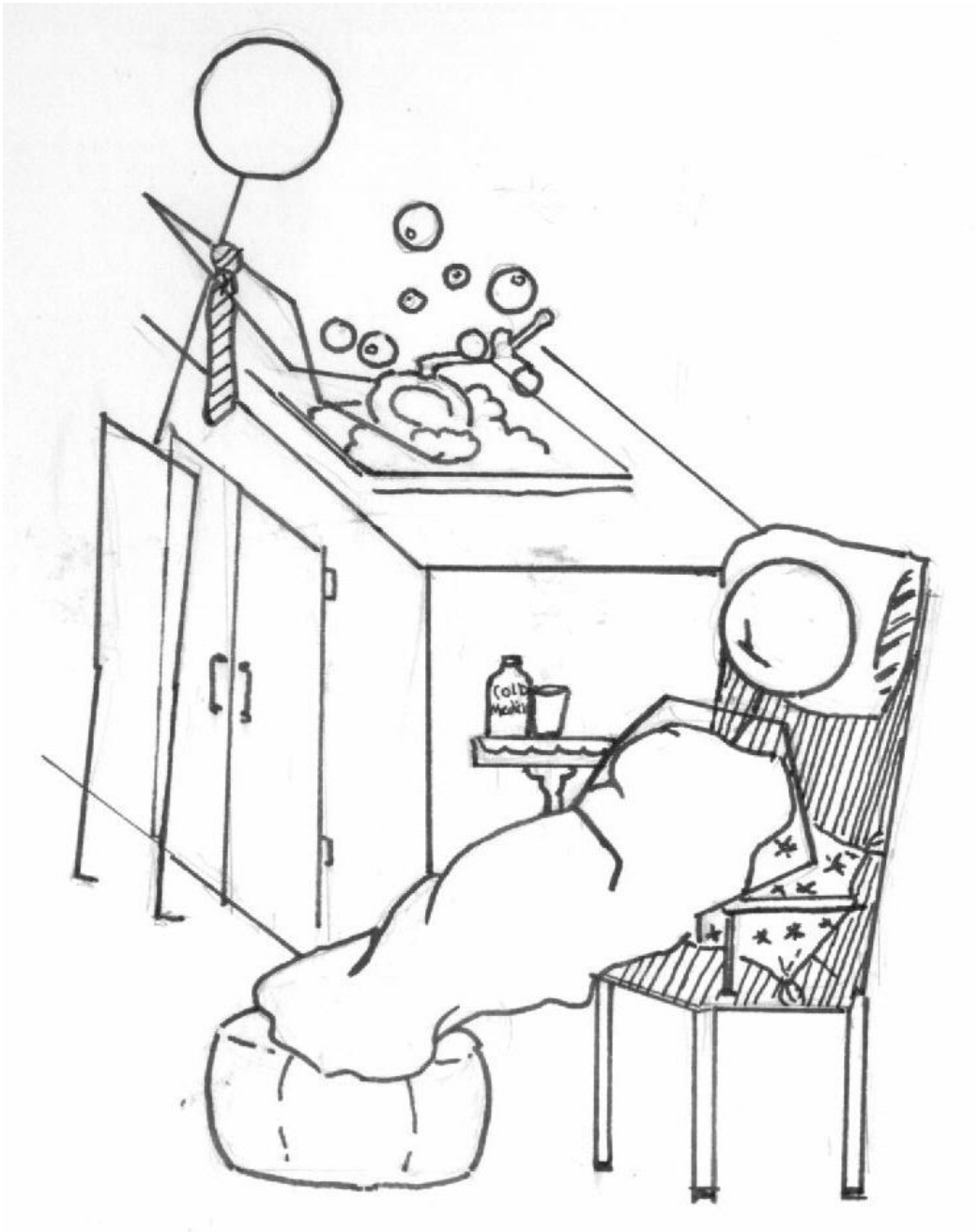

पति को अपनी पत्नी
से प्रेम करना चाहिए
जैसे यीशु मसीह ने
कलीसिया से किया।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ४
पत्नी
(ईश्वरीय पत्नी कैसे बनें)

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परमेश्वर के लिए विवाह क्या होता है? मत्ती १९:४—६

२. एक मसीही को किसके साथ विवाह करना चाहिए? २ कुरिन्थियों ६:१४—१५

३. एक पत्नी को पति के साथ संबंध बनाने में क्या करना चाहिए? इफिसियों ५:२२, २४, कुलुस्सियों ३:१८, १ पतरस ३:१—६

४. अपने परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए एक ईश्वरीय पत्नी की क्या जिम्मेदारियाँ होती हैं? नीतिवचन ३१:१०—२८

५. उसका पति के साथ संबंध पर यह कैसे प्रभाव डालता है? नीतिवचन १२:४

६. विवाह में कामाविषय के लिए परमेश्वर के क्या निर्देशतत्व हैं ? इब्रानी १३:४, १ कुरिन्थियों ७:४—५

८. परमेश्वर बच्चे होने के विषय में क्या कहता है? १ तीमुथियुस २:१५, भजन संहिता ११३:९

आधारभूत प्रश्न: (सिर्फ पत्नियों के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप पति की ओर समर्पित हैं जिस तरह प्रभु से होते हैं ? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण परमेश्वर से अनुग्रह ओर बुध्दि मांगे ताकि आप अपने पति की ओर समर्पित हों।

२. क्या आप अपनी जिम्मेदारियाँ पत्नी और माता होने के नाते पूरा करते हैं ? हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो इसी क्षण परमेश्वर से मांगे कि वह आपको एक मसीही पत्नी और माता बनाए ।

३. क्या आप पाते हैं कि आपक जीवन में बुलाहट का एक भाग माँ बनना है और पृथ्वी को भरने मे मदद करना है? उत्पति १:२८ हाँ .... नहीं... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इस क्षेत्र में स्पष्ट रूप से समझ दें।

पाठटिप्पणी : मनुष्य जाति का एक झूठ है कि संसार में जनसंख्या बहुत हो गया है। सच्चाई यह है कि संसार के सब लोग अमरीका के मुख्य शहर में समा सकते हैं। वहाँ सबको खिलाने के लिए काफी खाना है इसलिए अमरीकी लोग अपने किसानों को अनाज नहीं उगाने के लिए वेतन देते हैं ।

स्मरण करें : इफिसियों ५:२२ को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

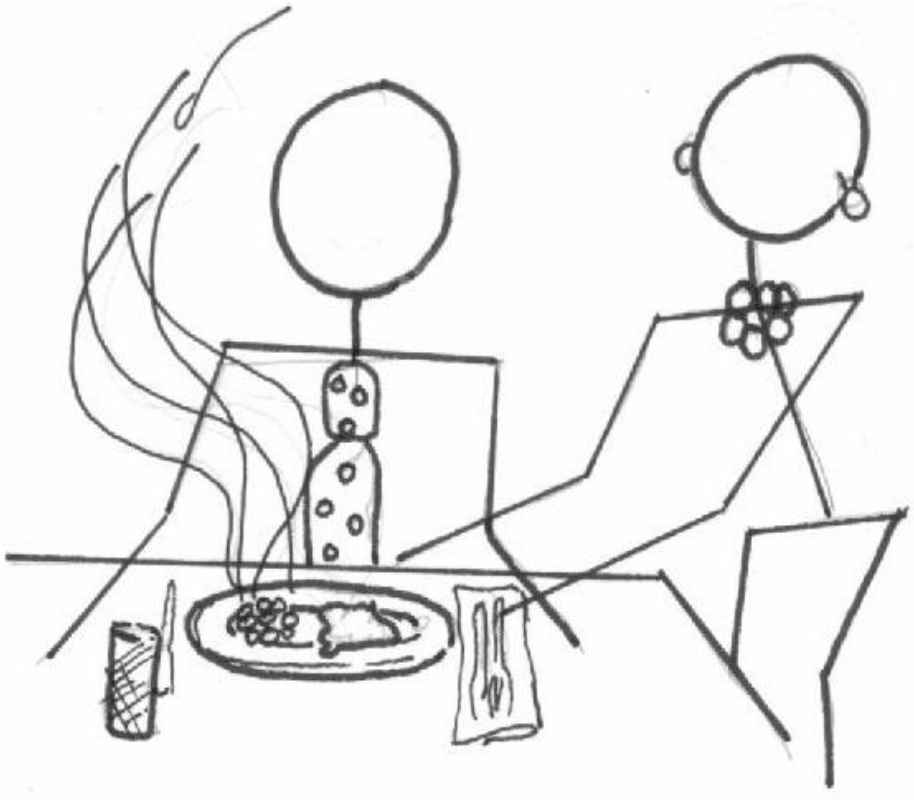

पत्नी को अपने पति
की मदद करने की खोज
करनी चाहिए ताकि वह उसके
जीवन के उद्देश्यों को पूरा कर सके।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ५

मां—बाप होने पर बच्चों की देख—रेख
किस तरह बच्चों का पालन करना चाहिए

आयत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हमें हमारे बच्चे कौन देता है ? भजन संहिता १२०:३—५

२. पिता को बच्चों के प्रति क्या जिम्मेदारी होती है? इफिसियों ६:४, कुलुस्सियों ३:२१, यहोशु २४:१५

३. माता की ज़िम्मेदारी बच्चों के प्रति क्या होती है? तीतुस २:४, नीतिवचन ३१:२७

४. हम बच्चों को यीशु मसीह के लिए जीने में किस तरह शिक्षा देते हैं? व्यवस्थाविवरण ६:३—९, ११:१८—२१

५. यीशु मसीह के विषय में सीखने से बच्चों को क्या रोकता है और आप उसके साथ कैसे व्यवहार करते हैं? नीतिवचन २२:१५, २३:१३—१४, १३:२४, १९:१८, २९:१५

६. सबसे महत्वपूर्ण बात हम बच्चों के लिए क्या कर सकते है? मरकुस १०:१४

७. परमेश्वर का वादा क्या होता है जब हम उसके वचनों के अनुसार बच्चों का पालन करते हैं? नीतिवचन २२:६

८. जब हम परमेश्वर की बातों में बच्चों को प्रशिक्षण नही देंगे तो क्या होगा? नीतिवचन २९:१५

९. यदि हम यीशु मसीह के लिए जीते हैं तो हम बच्चों के लिए क्या होते हैं और बच्चे हमारे लिए क्या होते हैं? नीतिवचन १७:६

१०. यदि आप यीशु मसीह के लिए जीते है तो आपके बच्चे क्या स्वीकार करेंगे? नीतिवचन १३:२२

आधारभूत प्रश्न : (सिर्फ माता—पिता के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप अपने बच्चों को परमेश्वर की ओर से भेंट समझते हैं? हाँ... नहीं ... यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह इस सच को आपके हृदय के लिए सच्चाई बना दें।

२. क्या आप माता—पिता बनकर जिम्मेदारी लेते हैं बच्चों को पालने की ? हाँ... नहीं ... यदि नहीं, तो इसी क्षण मांगे कि परमेश्वर आपको माता — पिता बनकर जिम्मेदारी को करने में मदद करें।

३. क्या बच्चों के साथ परमेश्वर की बातें करना, आपके लिए नियमित भाग बन गया है? हाँ... नहीं ... यदि नहीं,तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह नियमित रूप से आपको बच्चों के साथ उसकी सच्चाई को बांटने में मदद करें।

४. क्या आप प्रेम ओर सख़्ती से अपने बच्चों का अनुशासन करते हैं जब वे आपका निरादर करते हैं? हाँ... नहीं ... यदि नहीं,तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मदद करें कि बच्चों को ईश्वरीय अनुशासन दें।

५. क्या आप एहसास करते हैं कि आपका भविष्य उस बात पर निर्भर करता है जो आप इस क्षण बच्चों के साथ करते हैं ? हाँ... नही ... यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि इस सच्चाई को आपके हृदय के लिए सत्य बना दें।

६. क्या आप अपने बच्चों को मदद करते हैं ताकि वे यीशु मसीह के लिए अपना जीवन समर्पित कर सकें? हाँ... नहीं ... यदि नहीं, तो इसी क्षण परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मदद करें कि आप इस कार्य को करने में समर्पित हों और वह आपको दिखाए कि किस प्रकार से यह किया जाना चाहिए।

स्मरण करें : **मरकुस १०:१४** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

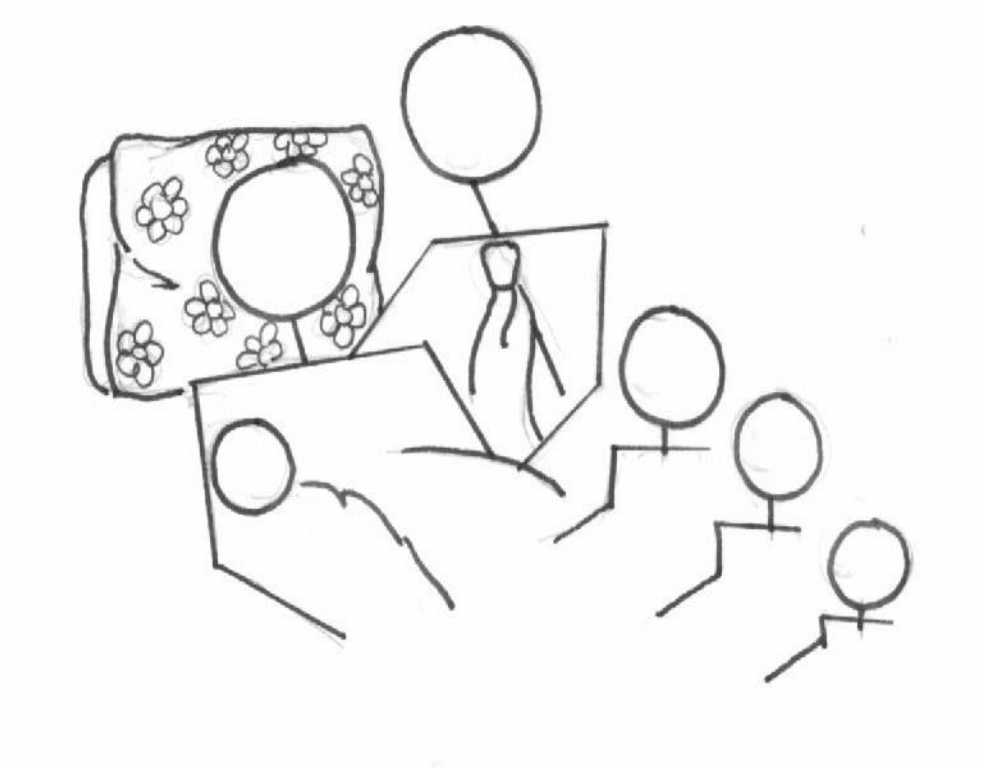

बच्चें परमेश्वर की ओर से भेंट होते हैं।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ६
बच्चों जैसा होना
(किस तरह बच्चे जैसा होना चाहिए)

आधारभूत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. हमें क्या सीखना चाहिए ताकि परमेश्वर के राज्य में आप एक भाग बन जाएँ? मरकुस १०:१५

२. किस तरह हमें हमेशा एक बच्चे जैसा होना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १४:२०

३. बच्चों की जिम्मेदारी उसके माता–पिता के प्रति क्या होना चाहिए? इफिसियों ६:१—३, कुलुस्सियों ३:२०

४. आपको क्या करना चाहिए यदि आपके माता — पिता आपको परमेश्वर का निरादर करना सिखाते हैं ? व्यवस्थाविवरण २७:१०, ३०:१९—२०, दनिय्येल ११:६—२१

५. क्या होगा यदि बच्चे अपने माता–पिता का निरादर करेंगे ? नीतिवचन ३०:१७

६. एक मसीही होने के नाते एक बच्चे को क्या करने की खोज करनी चाहिए ? २ तीमुथियुस २:२२, १ तीमुथियुस ४:१२, सभोपदेशक १२:१

७. बच्चे होने के नाते माता–पिता के प्रति हमारी क्या जिम्मेदारी होनी चाहिए जब हम बड़े होते हैं? नीतिवचन २३:२२, १ तीमुथियुस ५:४

आधारभूत प्रश्न : (बच्चे कैसे बने) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप में बच्चो जैसा प्रेमी मनोवृत्ति है ? हाँ... नहीं ... यदि नहीं, तो इसी क्षण परमेश्वर से मांगे कि वह आपको ऐसा बना दें।

२. क्या आप माता — पिता की आज्ञा का पालन करने और आदर देने की खोज करते हैं ? हाँ ...नहीं..... यदि नहीं..... तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको ऐसा करने में मदद करें।

३. क्या आप ईश्वरीय उदाहरण बनने की खोज करते हैं भले ही आपका उम्र कुछ भी क्यों न हो ? हाँ ...नहीं..... यदि नहीं..... तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से इसी क्षण मांगे कि वह आपको मदद करें।

४. क्या आप अपने माता — मिता के प्रति अपने जिम्मेदारियों को पूरा करना जारी रखते हैं जैसे आप बड़े होते हैं ? हाँ ...नहीं..... यदि नहीं..... तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से इसी क्षण मांगे कि वह आपको ऐसा करने में मदद करें।

स्मरण करें : **१ कुरिन्थियों १४: २०** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हमें बुराई के ज्ञान में बच्चे बने रहना चाहिए।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ७
अकेला होना
(किस प्रकार से अकेला होना चाहीए)

आधारभुत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. पवित्र शास्त्र नपुंसक होने के विषय में क्या कहती है? मती १९: १०—१२, १ कुरिन्थियों ७:१,८,१७

२. नपुंसक होने का क्या लाभ है? १ कुरिन्थियों ७ : ३२, ३४—३५

३. एक व्यक्ति को अकेला क्यों नही रहना चाहिए? १ कुरिन्थियों ७:२९

४. क्या अकेले व्यक्ति को अलग से रहना चाहिए : समोपदेशक ४ : ९—१२, भजन संहिता ६८: ६

आधारभूत प्रश्न : (सिर्फ अविवाहितों के लिए) आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या परमेश्वर ने आपको अकेले रहने के लिए बनाया हैं? हाँ —— नहीं —— यदि हॉ, तो परमेश्वर के सामर्थ और बुध्दि की खोज करें ताकि आपकी बुलाहट पूरी हो।

२. क्या आप अकेले रहते हैं? हाँ —— नहीं —— यदि हाँ, तो माँगे कि परमेश्वर आपको मसीही परिवार में रहने के लिए दरवाजा खोलें।

स्मरण करें : **१ कुरिन्थियों ७ : १७** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

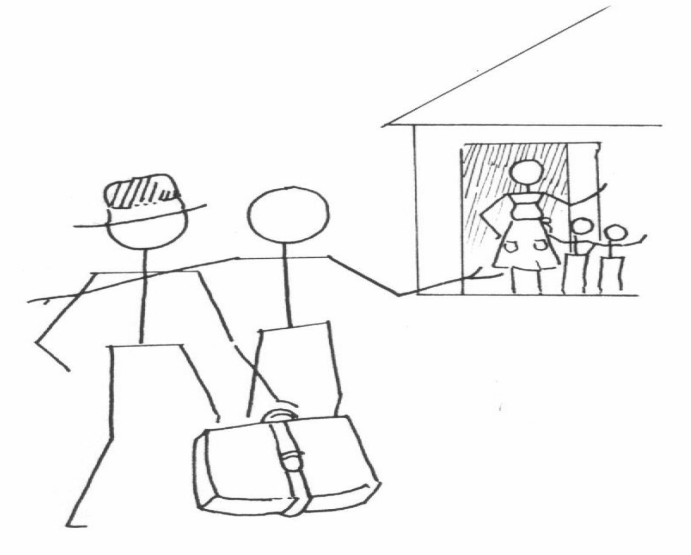

परमेश्वर अविवाहित व्यक्ति को परिवार में डालता है।

आधारभुत पारिवारिक जीवन
पाठ ८
कामातुर दर्जे
(परमेश्वर की नैतिकता)

आधारभुत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परमेश्वर ने हमें शरीर क्यों दिया है? १ कुरिन्थियों ६:१३—१९

२. विवाह के पहले परमेश्वर कामवासना के विषय में क्या बताता है ? गलतियों ५:१९—२१,इफिसियों ५:५—७

३. जब हमारा लैंगिक संबंध नीतिक रूप से नहीं हो तो क्या होता है ? १ कुरिन्थियों ६ : १८, नितिवचन ६:२६—२९

४. एक अनैतिक स्त्री के विषय में पवित्र शास्त्र क्या कहती है ? नितिवचन २३ :२७—२८,९ :१३—१८

५. पवित्र शास्त्र अनैतिक पुरूष के विषय में क्या कहती है ? नितिवचन ६:३२

६. एक व्यक्ति कामातुर होने की परीक्षा में कैसे विजय प्राप्त करता है ? १ कुरिन्थियों ६ :१८, २ तीमुथियुस २:२२, याकूब ४:४—१०

७ लैंगिक संबंध किस समय ठीक होता है ? इब्रानी १३ : ४

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप महसूस करते हैं कि विवाह के बाहर लैंगिक संबंध और व्यभिचार गलत है? हाँ——नहीं —— यदि नहीं तो परमेश्वर से मांगे कि इस सच्चाई को आपके हृदय के लिए सत्य बना दें।

२. क्या आपने जीवन के हर कार्य और सारे गलत लैंगिक मनोवृत्तियों के लिए पश्चाताप किया है ? हाँ ——नहीं ——यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करें।

३. जब आप लैंगिक संबंध की परीक्षा का सामना करते हैं तो क्या वहाँ से भाग निकलते हैं? हाँ —— नहीं—— यदि नहीं, तो इसी क्षण पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको मदद करें।

स्मरण करें : **इब्रानी १३:८** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

(हमें कामवासना की परीक्षा से बच निकलना चाहिए।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ९
विवाह और अलगाव

आधारभूत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परमेश्वर विवाह से अलगाव के विषय में क्या सोचता है ? मलाकी २ : १६

२. परमेश्वर विवाह से अलगााव की अनुमति क्यों देता है ? मत्ती १९ : ८

३ किस स्थिति में एक पुरूष अपने पत्नी को त्यागपत्र देता है ? मत्ती ५ : ३२

४. एक पुरूष दोबारा विवाह के लिए कब आजाद होता है ? मत्ती १९:९, १ कुरिन्थियों ७:२७—२८

५. किस स्थिति में एक स्त्री अपने पति को तलाक देती है और क्या वह फिर से विवाह कर सकती है ? १ कुरिन्थियों ७:१०—११, ३९, रोमियों ७:२

ध्यान दें : पति की अविश्वासयोग्यता के विषय में कुछ नहीं कहा गया है।

६. परमेश्वर उन लोगों को किस निगाह से देखता है जो तलाक और विवाह के नियमों का उल्लंघन करते हैं ? मरकुस १०:११—१२

७. ऐसे समाज का क्या होता है जो विवाह और तलाक के विषय को लेकर परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन करता हो ? यिर्मयाह २३:१०, ५:७—९, १३:२५—२७, २९:२२—२३, होशैं ४:१—३

८. हमें क्या करना चाहिए जब हम पाते हैं कि तलाक और विवाह के विषय में हमने परमेश्वर की व्यवस्था का उल्लंघन किया है? १ कुरिन्थियों ७:१७, २४, २७, १०—११, १ यूहन्ना १:९

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप तलाक से घृणा करते हैं ? हाँ .... नहीं...यदि नहीं, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपकी मदद करें ताकि आप वैसा देखें जैसा वह देखता है, और घृणा करे जैसा परमेश्वर करता है।

२. क्या आपने विवाह और तलाक को लेकर परमेश्वर की सच्चाईयों का उल्लंघन किया है ? हाँ ....नहीं.... यदि हाँ, तो पश्चाताप करें और खोजें कि उसे किस तरह सही किया जाए।

३. क्या आपने दूसरों के विवाह और तलाक के संबंध को अनुमति दिया है कि वे परमेश्वर की सच्चाई का उल्लंघन करें इस बात में विफल होकर कि परमेश्वर के वचन को आप उनके साथ बाँट नहीं सके ? हाँ.... नहीं..... यदि हाँ, तो पश्चाताप कर परमेश्वर से मांगे कि वह आपको उसके वचनों को बोलने और जीने में मदद करें चाहे वह विवाह या तलाक संबंधी हो ।

४. क्या आप प्रार्थना करते हैं कि तलाक का श्राप आपके देश से हटा दिया जाए ? हाँ ... नहीं. यदि नहीं, तो इसी क्षण ऐसा करना शुरू करें।

स्मरण करें : **मलाकी २:१६** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

परमेश्वर तलाक से घृणा करता है।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ १०
(टूटे घरों के साथ कैसे व्यवहार करना)

आधारभुत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परमेश्वर की ईच्छा उस पुरूष के लिए क्या होता है जिसने तलाक लिया हो?इफिसियों ५ : २५, २ कुरिन्थियों ५ : १८—१९, १ तीमुथियुस ५:८

२. परमेश्वर की इच्छा उस स्त्री के लिए क्या होती है जिसने तलाक लिया हो? १ कुरिन्थियों ७ : ११

३. परमेश्वर अपने लोगो को किस नजर से देखता है जब उनके परिवार पाप के कारण टूट जाता है यिर्मयाह १४ : १७

४. उन टूटे हृदय वालों के साथ, उनके परिवार के परिस्थितियों में परमेश्वर की इच्छा क्या होती है? भजन संहिता १४७ : ३, यशायाह ६१ : १

५. परमेश्वर हमारे लिए क्या बन जाता है जब हम उसे हमारे टूटे हुए हृदयों को और हमारे जरूरतों की सेवकाई के लिए मदद मांगते है? भजन संहिता १० : १४ : १४६ : ९, ६८ : ५, यशायाह ५४ : ५

६. टूटे हुए रिश्तों के साथ व्यवहार करते हुए हमें किसके विरोध में सुरक्षा लेना है ? इब्रानियों १२ : १५

७. हमे ऐसा क्या करना चाहिए जिससे हमारी परिस्थिती बदल जाए और टूटे हृदय को चंगाई मिले ? मत्ती ५ : ४४

८. यदि हम टूटे घर से हों तो परमेश्वर उस परिस्थिति में हमसें क्या मांगता है ? १ कुरिन्थियों ७ : २६ — २७ ३९ — ४० : फिलिप्पियों ४ : ११ — १२ : याकुब ५ : १६

<u>आधारभूत प्रश्न :</u> आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप महसूस करते है कि यदि संभव हो तो परमेश्वर की इच्छा टूटे घरों को जोडने की है ? हाँ — नहीं — यदि नहीं , तो परमेश्वर से मांगे कि वह इस सच्चाई को आपके लिए सत्य बना दे।

२. क्या आप उन लोगों को उत्साहित करते हैं जो टूटे घर के हों ताकि वे मिलाप के लिए परमेश्वर पर विश्वास करे ? हाँ — नहीं — यदि नही, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

३. क्या आप महसूस करते हैं कि टूटे हृदयवालों के लिए चंगाई का एक ही मार्ग यीशु मसीह के साथ संबंध से होता हैं ? हाँ — नहीं — यदि नही, तो परमेश्वर से मांगे कि वह इस सच्चाई को आपके लिए सत्य बना दे और उसके प्रेम को टूटे हृदय वालों की सेवकाई करने में आपकी मदद करें।

४. क्या आप टूटे घर के लोगो को उत्साहित करते हैं कि यीशु मसीह के साथ संबंध उनके आत्मिक और भावुक जरूरतों को पूरा कर सकता है न कि जरूरतो को पूरा करने के लिए मनुष्य के संबंध की खोज करना ? हाँ —— नहीं यदि नही, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

५. क्या आप टूटे घर के लोगों को उत्साहित करते हैं कि वे अपने परिस्थिति को प्रार्थना में रखे इससे पहले कि प्रभु उन्हें चोट के लिए क्षमा करें और उनके चंगाई और जरूरतों को पूरा करने के लिए परमेश्वर पर भरोसा करें ? हाँ ——नहीं —— यदि नहीं, तो आज से ऐसा करना शुरू करें।

स्मरण करें : **भजन संहिता १४७ : ३** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

परमेश्वर चाहता है कि टूटे घरों को चंगाई मिले

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ ११.

प्रेमीजन जिन्होंने उदार प्राप्त नहीं किया है
(अपने परिवार के लिए गवाह कैसे बने)

आधारभूत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. प्रेमी जन जिन्होंने उध्दार प्राप्त नहीं किया है ऐसे लोगों के लिए परमेश्वर का क्या वायदा है ? प्रेरितों के काम १६ : ३१

२. एक पत्नी को क्या करना चाहिए ताकि जिन लोगों ने उध्दार प्राप्त नहीं किया हो वे बचा लिए जाएँ ? १ पतरस ३ : १ — २, १ कुरिन्थियों ७ : १३ — १६, नीतिवचन २२ :६

३. एक पति को क्या करना चाहिए ताकि जिन लोगों ने उध्दार प्राप्त नहीं किया हो वे बचा लिए जाएँ ? इफिसियों ६ : ४, ५ : २५, १ कुरिन्थियों ७ : १२, १४—१६, कुलुस्सियों ३ : १९

४. एक बच्चें को क्या करना चाहिए ताकि जिन लागों ने उध्दार प्राप्त नही किया हो वे बचा लिए जाएँ ? इफिसियों ६: १—२, १ तीमुथियुस ४ : १२

५. परमेश्वर का वचन क्या कहता है जब हम कठिन परिस्थितियों का सामना उन लोगों को साथ करते है जिन्होने उध्दार प्राप्त नहीं किया है ? रोमियों १२ : १७—२१

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप विश्वास करते हैं कि परमेश्वर आपके उन परिवार के सदस्यों को बचा सकता है जो यीशु मसीह के लिए नहीं जीते ? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको उस पर भरोसा करने के लिए विश्वास दें ताकि उन सदस्यों को उध्दार मिले।

२. क्या आप वह करते हैं जो आपको करने की जरूरत है ताकि वे यीशु मसीह के लिए जिएँ ? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो इसी क्षण परमेश्वर से मांगे की वह आपकी मदद करें कि उन्हें यीशु में लाने के लिए आप अपना कार्य करें।

३. क्या आप उनको यीशु मसीह का प्रेम दिखातें है जब भी आप उनके साथ व्यवहार करते है ? हॉ —— नहीं —— यदि नही, तो परमेश्वर से मांगे कि वह आपकी मदद करे कि यीशु मसीह के प्रेम द्वारा उनसे प्रेम कर सकें।

स्मरण करें : **प्रेरितों के काम १६ :३१** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हमारे खोए हुए परिवार के सदस्य उध्दार पाएँगें जब वे देखेगें कि हम यीशु मसीह के लिए जीते हैं।

आधारभूत पारिवारिक जीवन
पाठ १२.
पारिवारिक वित्त — व्यवस्था
(वित्त व्यवस्था के पवित्र शास्त्रीय सिध्दांत)

आधारभूत अध्ययन : जो आयत दिए गए हैं उनका उपयोग करते हुए हर प्रश्न का उत्तर दें।

१. परिवार के आर्थिक जरूरतों की चिंता के लिए कौन जिम्मेदार है ? १ तीमुथीयुस ५ : ८

२. इस बात को करने में मनुष्य को किस प्रकार परमेश्वर की मदद मिलती है ? व्यवस्था विवरण ८ :१८ : मत्ती ६ : ३१ — ३३ : फिलिप्पियों ४ : १९

३. परिवार के जरूरतों को पूरा करने के लिए स्त्रियों की क्या जिम्मेदारी होती है ? तीतुस २ : ४ — ५ : नितिवचन ३१ : १० — ३१

४. एक व्यक्ति को क्या करना चाहिए ताकि वह परमेश्वर के राज्य का एक भाग हो और परमेश्वर के आशीषों को स्वीकार करता हो ? मत्ती ४ : १७, २५ : १४ — ३० : प्रेरितों के काम ३ : १९ : तीमुथुयुस १ : ९ रोमियों ११ : २९ : इफिसियों ५ : १७

५. कार्य के प्रति एक व्यक्ति की मनोवृत्ति किस प्रकार का होना चाहिए ? इफिसियों ४ : २८, ६ : ६—७

६. एक व्यक्ति का कार्य करने का स्वभाव किस प्रकार होना चाहिए ? नीतिवचन १४ : २३, १३ : ११ : १० : ४ और १६

७. परमेश्वर हमें जिन बातों से आशीष देता है उनके साथ क्या करना चाहिए ? नीतिवचन ३ : ९ — १०, मलाकी ३ : १० — ११, मत्ती ६ : १९ — २१, १ कुरिन्थियों १६ : १ — २, २ कुरिन्थियों ८ : १२ — १५ : ९ : ६ — ८

८. हमारे दशवांस को किस भंडार—ग्रह में डालने की अपेक्षा करता है ? उत्पत्ति १४ :१८—२० , १ कुरिन्थियों ९ — ११ : गलतियों ६: ६ , १ तीमुथियुस ५ : १७ — १८

९. दशवांस के अलावा हमें किसको दान देना चाहिए ? याकूब २ : १५ — १६ : १ यहून्ना३ : १७ गलातियों ६ : १०

१०. रूपयो को व्यवहार करते समय हमें क्या नहीं करना चाहिए ? रोमियों १३ : ८ नीति— वचन २२ : २६ ५ १७ : १८

११. १ तीमुथुयुस ६ : ६ — १० के अनुसार हमें वस्तु — विशिष्ट के प्रति कौन सी मनोवृत्ती रखनी चाहिए जिससे संतुष्टी प्राप्त होती है ?

१२. हमारे खर्च करने के पीछे क्या मार्ग दर्शन होना चाहिए ? १ कुरिन्थियों १० : ३१

१३. हमारे परिवार के जरूरतों को पूरा करने के लिए कौन—सी बात परमेश्वर को रोके रखेगीं ? व्यवस्थाविवरण २८ : १५—२०

१४. यदि हम परमेश्वर के सिध्दांतों के अनुसार जीवन व्यतीत करते हैं तो हमारे परिवार के साथ क्या होता है ? व्यवस्थाविवरण २८ : १ — १३

आधारभूत प्रश्न : आपने जो अध्ययन किया है उसके अनुसार जीवन व्यतीत करने में आपकी मदद करना।

१. क्या आप देखते हैं कि आपको क्या करने की जरूरत है ताकि आपके परिवार को प्रयोजन मिले ? हाँ —— नही —— यदि नहीं, तो इसी क्षण प्रार्थना करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इस बात को दिखाए ।

२. क्या आप अपने जीवन में परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने की खोज करते हैं और उस पर भरोंसा करते हैं कि वह आपके जरूरतों को पुरा करेगा ? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो पश्चाताप करे और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको इसी क्षण मदद करे।

३. क्या आपको काम के प्रति सही मनोवृत्ति है ,और अच्छे कार्य की आदतें है ताकी परमेश्वर आपको आशीष दे ? हाँ —— नहीं —— यदि नहीं, तो पश्चाताप करें और परमेश्वर से मांगे कि वह आपको अच्छी मनोवृत्ति और अच्छा स्वभाव दे।

४. क्या पैसों के साथ व्यवहार करते समय आप परमेश्वर को आदर देते हैं ? हॉ ——नहीं ——यदि नहीं, तो पश्चाताप करें और मांगें की परमेश्वर इसी क्षण आपको मदद करे।

स्मरण करे : **फिलिप्पियों ४ : १९** को स्मरण करते हुए परमेश्वर के वचन को हृदय मे छुपाएँ।

हम किस तरह पैसे खर्च करते हैं उसमें परमेश्वर की खोज करनी चाहिए।

परिशिष्ट अ

बच्चो को प्रभु में बढ़ाना
याद करने के लिए कुछ बाते

१. इस बात का निश्चय करें कि जो उपदेश बच्चों को देते है वह पवित्र—शास्त्रीय सिध्दांतो पर आधारित और एकरूप हो न कि समाज का वर्तमान सोच हो।

२. इस बात का निश्चय करें कि आप जिन बातों का निर्णय माता—पिता होने के नाते करते हों वह पवित्र शास्त्र पर आधारित और एकरूप हो।

३. विद्यालय—पूर्व और प्रारंभिक उम्र : हर रात को कुछ समय उनके पवित्र शास्त्र से कुछ पढें या एक अच्छी बाईबल की कहानी उनके लिए पढें। पवित्र शास्त्र के चरित्रों और उनके जीवनों के विषय में उन्हें शिक्षा दे। उन्हें मूल पवित्र शास्त्र के सच्चाईयों को समझने में मदद करें जैसे कि सुसमाचार , झूठ नहीं बोले या चोरी ना करे, और परमेश्वर को संपूर्ण हृदय से प्रेम करे। और पवित्र शास्त्रो के किताबों को स्मरण करने में उनकी मदद करें।

४. किशोर उम्र : परिवार में भक्ति, संगीत रखे जिसमें वे भाग ले सकते है। उनसें कहें कि उत्पत्ति से प्रकाशितवाक्य तक, पवित्र शास्त्र से कम से कम एक अध्याय रोज पढें। आधारभूत पवित्र शास्त्र सिध्दांत जो व्यक्तिगत जीवन, पारिवारिक जीवन, कलीसियाई जीवन, सुसमाचार प्रचार, और शिष्यत्व से ताल्लुक रखते हैं, उन्हें उन बातों को सिखाने मे मदद करना और अपने जीवनों मे उन्हे लागु करना। उन्हें इस बात के लिए जागृत करे कि जीवन में सफलता परमेश्वर के उददेश्यों को ढूंढने और उसे पूरा करने में हैं, और उन्हें ऐसा करने मे उत्साहित करें। उन्हे पवित्र शास्त्र के मुख्य अध्यायों को स्मरण करना चाहिए।

परिशिष्ट 'ब'

पति और पिता के लिए निर्देशतत्व (किस तरह आपके घर को प्रार्थना और सेवकाई गृह बनाना)

१. इस बात का निश्चय करे कि आप परमेश्वर का दर्शन रखते हैं और आपके जीवन में उसके उददे्श्यों को पूरा करने के लिए जीते हैं।

२. अपने दर्शन को पत्नी और परिवार के साथ बांटे। उनके लिए प्रार्थना करें, और परमेश्वर को समय की अनुमति दें ताकि वे उन्हें दिखा सके कि किस प्रकार वे उसमें एक भाग हैं।

३. प्रार्थना करें कि आपकी पत्नी और परिवार के पास परमेश्वर का दर्शन हो और वे जाने कि परमेश्वर का उददे्श्य उनके जीवन में क्या हैं।

४. अपने परिवार के मिशन दर्शन के लिए परमेश्वर की खोज करें। एक मिशनरी को गोद लें ताकि एक परिवार होने के नाते आप प्रार्थना और सहयोग दे सके।

५. अपने परिवार को उत्साहित करे कि वे पडोसियों, मित्रों और रिश्तेदारों को गवाही और उनकी सेवकाई कर सकें।

६. जैसे परमेश्वर अगुवाई देता हैं परिवार होने के नाते मिशनयात्रा के लिए निकले।

BASIC INSTITUTE REQUEST FORM

यदि आप आगे का प्रशिक्षण अंग्रेजी में चाहते हैं, तो कृपया हमसे संपर्क करे।

NAME _____

ADDRESS _____

CITY_____ STATE_____ ZIP_____

COUNTRY_____

HOME PHONE _____

WORK PHONE _____

CELL PHONE _____

BEEPER _____

FAX _____

EMAIL _____

I would like to train in English.

Please send me the BASIC Institute Catalog.

I have a prayer request. (Please put on back)

Mail To:

BASIC Institute
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556 U.S.A.
Or
Phone (228) 255-9251 / Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
Web page www.basicministries.com

यदि आप इस अध्ययन से (आशिषित) हुए हैं तो किसी के साथ इसकी प्रतिलिपि को बाँटे।

प्रकाशक से सीधा प्राप्त । अंग्रेजी में लिखकर हमें अवश्य बतायें
आप किस भाषा में चाहते हैं।

WRITE TO:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. BOX 431
KILN, MS 39556
U.S.A.

Phone (228) 255-9251

Fax (228) 255-8927

Copies are available by Email
Send your request to basic@basicministries.com
Or
Visit our web site
www.basicministries.com

COPIES ARE AVAILABLE IN OTHER LANGUAGES.

CONTACT US FOR MORE INFORMATION.

क्या आप सुखी घर चाहते हैं ?

क्या आप अपने संबंधियों से मिलजुल कर रहना चाहते है?

क्या आप बच्चों की परवरिश कैसे की जाती है, यह जानना चाहते हैं ?

और अकेले रहने के बारें में ?

और क्या यह जानना चाहते हैं कि टूटी हुई गृहस्थी को कैसे सँवारे ?

।। तब यह पुस्तक आप ही के लिये है।।

भाई हेनरी पल्सीफर द्वारा संकलित

और

पॉला मिंगुची द्वारा चित्रित

आपको सफल और विजयी जीवन जीने में सहायता करने हेतू अध्ययन की श्रृंखला की यह प्रथम रचना है। भाई हेनरी ने ५० से अधिक वर्षो तक यीशु के लिये जीने से विजय का अनुभव किया है। साथ ही क्रूस के साथ चलने से उन्हे केंसर से भी चंगाई मिली है। चँगाई मिलने के बाद उन्हों ने संसार की यात्रा की, जिस में उन्होंने यीशु को बाँटा और औरों को सिखाया कि यीशु के लिये जीने से विजय और सफलता कैसे प्राप्त की जाती है , जिससे परमेश्वर का उद्देश्य उनके जीवन में कैसे पूरा होता है।

अपने इन अनुभवों पर आधारित लेखों का संकलन उन्होंने किया है, जिससे पवित्र शास्त्र के मूल सिध्दांतो को लोगों को समझने में और उनके मुताबिक जीवन जीने में सहायता हो, जिससे (लोगोंको) उन्हे एक सफलतापूर्ण, विजयी जीवन प्राप्त हो। इस विशेष अध्ययन की रचना , पारिवारिक जीवन के लिये, परमेश्वर के सिध्दांतो को समझने में सहायता करने के लिये की गयी है। इस से आपके निजी जीवन में भी , (परमेश्वर का) (धार्मिक) व्यक्ति बनने में और प्रत्येक दिन यीशु के लिये जीने से आप को सफलता और विजय की प्राप्ति होगी। इस के उपयोग से आप औरों को पारिवारिक जीवन के बारे में सीखा सकेंगे और, व्यक्तिगत और सामुदायिक अध्ययन के लिये भी कर पायेंगे।

प्रतिलिप्यधिकार १९९० सर्व हक सुरक्षित

इस अध्ययन का कोई भी हिस्सा प्रकाशक की अनुमति के बिना छापना नहीं है।
अतिरिक्त , कुछ हिस्से छापने के बाद मुफ्त में बाँटे जाए।
मूल स्त्रोत को उचित प्रमाण देना आवश्यक है।

PUBLISHED BY:

BROTHERS & SISTERS IN CHRIST
P.O. Box 431
Kiln, MS 39556
USA

Phone (228) 255-9251
Fax (228) 255-8927
Email basic@basicministries.com
On the web at www.basicministries.com